**[DRAFT]**

**Suchita Horo**
**Government Middle School, Sindri, Block Arki**
**Sindri, Khunti Jharkhand**
Email id: upghssindri75@gmail.com

**Abstract**

This school caters to students belonging to scheduled tribes such as Munda, Orao, Khadiya, Asur and Birhor among others. The language of 94% population in this area is Mundari. The people of villages are employed in agriculture, cottage industries and steel industry. The main challenges of the school head were human trafficking, child marriage and lack of avenues for vocational education. The school ensured safety of school infrastructure by holding special meetings with Gramsabha, Panchayat Samiti, SMC and teachers, awareness rallies and printing of pamphlets – resulted in safety of school building and infrastructure by community. Issues related to human trafficking are discussed in detail in the morning assembly; students are made aware of various strategies to prevent being allured by strangers, to be in constant touch with school staff and share everything with parents. The school holds special karate training among students for self defense. Girls have become empowered in their fight against human trafficking and can handle any adverse situation with enhanced self-confidence.

## शाला का सन्दर्भ : सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ

उत्क्रमित उच्च सह मध्य विद्यालय, खूँटी जिलान्तर्गत अड़की प्रखण्ड के सिन्दरी पंचायत में अवस्थित है। यह जिला मुख्यालय से पूर्व दिषा में 38 किमी की दूरी पर स्थित है। इस विद्यालय में **90 प्रतिषत छात्र–छात्राएं आदिवासी जानजति** से संबधं रखते है।

हमारा विद्यालय चारों ओर हरे–भरे वातावरण से घिरा हुआ है, यहां की प्रकृतिक छटा मनोरम दृष्य की भांति है। छोटी छोटी पहाड़ियां एवं पठार विद्यालय के वातावरण को और भी आकर्षक बनाती है। इस विद्यालय में पठन–पाठन हेतू कुल 08 कमरें,01 पुस्तकालय कक्ष, 01 कला एवं षिल्प कक्ष, एक कार्यालय, एक स्टॉफ कक्ष एवं एक प्रयोगषाला है, चूँकी हमारे विद्यालय का संचालन कक्षा के.जी से वर्ग दषम् तक होता है जिसमें उच्च प्राथमिक (के.जी से कक्षा आठ) के बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन की व्यवस्था है।

विद्यालय परिसर में एक खेल का मैदान है जिसमें विद्यालय की तमाम गतिविधियॉ संचालित की जाती हैं। हाल ही में ग्रम सभा एवं षिक्षा समिति की मदद से पेयजल एवं शौचालय की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया गया।

### सामाजिक, आर्थिक, भाषा एवं सांस्कृतिक परिचय

विद्यालय के आसपास के गॉवों में विभिन्न समुदाय के लोगों का समिश्रण पाया जाता है। सभी ग्रामवासियों का व्यवहार सहयोगात्मक होता है। यहां के लोग जीवनयापन हेतु खेती, कुटीर उद्योगों पर निर्भर है। इस क्षेत्र में **लाह का व्यापार अधिकाधिक किया जाता है, जैस की सर्व विदित है कि पूरे विष्व में झारखण्ड एक अधिकाधिक लाह निर्यातक राज्य है।**

खूँटी जिला का गठन, 12 सितम्बर 2007 को झारखण्ड राज्य के 23वें जिले के रूप में किया गया। खूँटी जिला मुख्यतः नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण यहां अत्याधिक विकास नहीं हो पाया। परन्तु विगत कुछ वर्षो सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं एवं जागरूकता के मदद से इस जिले में भी विकास की रफ्तार पकड़ती जा रहीं है। यह एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है जहां कुल **32 प्रकार की जानजतियां** निवास करती है। मुख्य रूप से मुण्डा, उरॉव, खड़िया, असूर, बिरहोर आदि। इस क्षेत्र **की 94 प्रतिषत जनसंख्या की क्षेत्रीय भाषा मुण्डारी** है।

इस क्षेत्र में मुख्य रूप से सरहुल, करम, टूसु, भोगता पर्व आदि हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

**सरहुल पर्व** – यह आदिवासीयों का प्रमुख त्योहार है। बसंत मौसम में जब साल के पेड़ पर नए फूल खिलते है तब मनाया जाता है। गॉव के पुजारी/ पाहन कुछ दिनों के लिए व्रत भी रखते है।

**करम पर्व** – यह भाद्र माह में चॅद्रमा की एकादषी पर आयोजित किया जात है। इसमें प्रकृति की रक्षा हेतु करम वृक्ष की पूजा की जाती है। इसमें ग्रामीणवासी ढ़ोल मांदर बजाकर नृत्य करते है।

**टुसू पर्व** – यह पौष माह के अन्त में सर्दियों के दौरान फसल कटाई के बाद मनाया जाता है। टुसू एक अविवाहित लड़की का नाम है, इस पर्व में कुंवारी लड़कियां और ग्रामीण बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते है। यह पर्व ग्रामीणों की सादगी एवं मासूमियत को दर्षाता है।

**भोगता पर्व** – यह त्योहार बसंत और गर्मी के बीच आता है जिसमें आदिवासी लोगों के द्वारा बुद्धा /षिव बाबा की पूजा की जाती है। इसमें भक्तगण नंगे पावं अग्नि पर चलते है तथा ग्रामीणों के द्वारा छऊ नृत्य भी किया जाता है जो काफी मनोरंजक होता है। भक्त अपने षरीर पर छेद करके हुक लगाते है तथा साल वृक्ष के पोल पर अपने आप को बांध कर झूलते है। यह साहस और बहादूरी का परिचय होता है।

**विद्यालय के आसपास के क्षेत्र की पहचान**

1. हमारें विद्यालय के आसपास के क्षेत्र पर्यटन स्थलीय है। जैसे रानी फॉल, दषम फॉल, हुंडरू फॉल, **दिवड़ी मंदिर**, अंगनाबाड़ी, सूर्य मंदिर **आदि। विद्यालय से महज 05 किमी की दूरी पर स्थित दिवडी मंदिर विष्व विख्यात है, जिसमें भारतीय क्रिकेट जगत के पूर्व कप्तान सह लेफ्टीनेंट कर्नल महेंद्र सिंह धौनी प्रायः इस मंदिर में माता के दर्षन एवं अर्षीवाद हेतु आते है और सफलता का श्रेय देते है।**

2. खूँटी से हॉकी के खेल में झारखण्ड की एकमात्र महिला खिलाडी **निक्की प्रधान दुनिया के सबसे बड़े खेल ओलम्पिक में भाग लेने वाली प्रथाम महिला** के रूप में हमारे समाज की लड़कियों के लिए एक रोल मॉडल (प्रेरक) के रूप में उभरी।

3. **बिरसा मुण्डा** का जन्म स्थल उलिहातू है जो विद्यालय से महज 20 किमी की दूरी पर है जिन्होने देष की आजादी के लिए झारखण्ड राज्य से सन् **1875 में आंदोलन की** ष्षुरूआत की जिससे यहां के लोगों में देष प्रेम एवं सम्मान की भावना जागृत होती है।
4. परमवीर चक्र (पीवीसी)– यह भारत का सर्वोच्च वीरता पुरस्कार है। इसे पूरे भारत में कुल 21 जवानों एवं अधिकारियों को सम्मानित किया जा जुका है **जिसमें झारखण्ड़ के एकमात्र जवान अलबर्ट एक्का को भी मरणोपरांत सम्मानित** किया गया। है। जिससे पूरे देष में झारखण्ड़ की एक अलग गरिमामय पहचान बनती है।

## शाला का सन्दर्भ : चुनौतियाँ

- ग्रामीणों एवं आसपास के क्षेत्रों में हो रहे **मानव तस्करी** को रोकना।
- अभिभावकों को **बाल विवाह** के रोकथाम के लिए जागरूक बनाना।
- बिना किसी को **धार्मिक ठेंस** पहुँचाए विद्यालय परिसर में स्थित मंदिर को अलग करना।
- **व्यावसायिक षिक्षा** का व्यापक प्रचार प्रसार एवं विद्यालय में लागू करना।

## चुनौतियाँ के समाधान की योजना

अपने विद्यालय में योगदान के पष्चात् हमारे पास मुख्य रूप दो व्यापक चुनौतियां सामने आयीं–

1 **विद्यालय के उपस्करों की सुरक्षा, संरक्षण एवं स्वच्छता**– आए दिन देखा जाता था की विद्यालय में कमरों के तालों को तोड दिया जाता था, पान गुटका खाकर दिवारों को गंदा कर दिया जाता था। दिवारों पर अभद्र टिप्पनीयां, कमरों के बेंच–डेस्क, दरवाजों को तोड़ देना, शराब पी कर बोतलों को कमरों में फोडना, दिवारों को क्षतिग्रस्त कर देना, विद्यालय प्रांगन में लगाए गए बगीचे को बरबाद कर पेड़ पौधों घर ले जाना आदि हमारे समक्ष एक व्यापक चुनौतियॉ थीं।

**निदानः–**

- ग्राम सभा, पंचायत समिति, षिक्षा समिति एवं षिक्षकों के बीच एक विषेष बैठक किया गया।
- सभी विचार विमर्ष कर विद्यालय के सरंक्षण एवं स्वच्छता हेतू एक पम्फ्लेट जारी किया गया।
- छात्रों, षिक्षकों एवं विभिन्न समितियों के साथ मिलकर जागरूकता रैली का आयोजन किया गया।

2 **मानव तस्करी को रोकने के लिए सप्ताहिक विषेष जगरूकता अभियान चलाया गया**

- प्रत्येक सप्ताह के अन्तिम दिन प्रार्थना/एसेम्बली में मुख्य रूप से मानव तस्करी के बारे में चर्चा एवं इसके कारणों के बारे में छात्रों को जागरूक करना।
- इस घटना का षिकार होने के लिए विभिन्न टिप्स दिए गए जैसे **अजनबी से दूर रहना, अनजान व्यक्ति से बात न करना, अनजान द्वारा दिए गए वस्तु को स्वीकार न करना एवं अभिभावक के अनुमति/ जानकारी के बिना कोई काम करना। अपने दूर के करीबियों से दूर रहना।**
- छात्रों के बीच किषोरावस्था से संबंधित विषेष षिक्षा (उड़ान कार्यक्रम) की व्यवस्था करना।
- प्रत्येक सप्ताह छात्राओं के लिए अपने **आत्मरक्षा हेतु विषेष कराटे प्रषिक्षण** की शुरूआत करना।

**प्रविधियो, गतिविधियों एवं अन्य नवाचार के परिणाम**

सभी समितियों एवं छात्रों के द्वारा लिए गए निर्णय एवं प्रयास के बाद कुछ ही दिनों में अद्भूत परिर्वतन देखने को मिलने लगा। देखा जाने लगा की विद्यालय की दैनिक गतिविधि समाप्त होने के बाद जिस तरह का वातावरण होता था वही अलगे दिन के शुरूआत में भी देखा जाने लगा। लागों के साथ– साथ छात्रों में भी विद्यालय के उपस्करों की सुरक्षा एवं संरक्षण की भावना का विकास होने लगा इतना विकास की छात्र स्वयं सुबह की सैर के दौरान एवं शाम को विद्यालय एवं विभिन्न उपस्करों की सुरक्षा में रूचि लेने लगे एवं दूसरों को भी अपने बाल संसद की मदद से जागरूक करने लगे।

जैसा की हमलोग जानते है, **पूरे भारतवर्ष में झारखण्ड़ से सबसे अधिक लोग मानव तस्करों के षिकार होते है,** और खास कर खूँटी जैसे जिले से अधिकाधिक। चूँकी यहां षिक्षा की कमी, रोजगार का आभाव, आति निम्न आय एवं गरीबी होने के कारण लोग जल्द ही तस्करों के चंगुल में फसं जाते है। उपरोक्त निदान के पश्चात् छात्राओं में इस समस्या के विरूद्ध एक जागरूकता उत्पन्न होने लगी। छात्राओं में अपनेआप को विकसित एवं सुरक्षित रखने के प्रति एक नवीन आत्मविष्वस का उदय होना शुरू हो गया। छात्र– छात्राएं अपने आप को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने के प्रति जागरूक रहने लगी और अपने आसपास के लोगों को भी समस्याओं से निपटने के उपयों का भी आदान प्रदान करने लगी। किसी भी छेड़–छाड़ का जवाब और बचाव आसानी से आपने आत्मविष्वास के साथ करने लगी।

आसपास के क्षेत्रों मे हो रहे छोटे मोटे घटनाओं को रोकने के हमारे **विद्यालय में डालसा (डी.एल.एस.ए, डिस्ट्रक्ट लिगल लिटरेसी क्लब) का गठन** किया गया। जिसके तहत बच्चों के साथ साथ ग्रामीणों को भी अपने समस्याओं के निदान के लिए प्रत्यक्ष रूप से अपना आवेदन विद्यालय में दे सके उनका समाधान जिला न्यायाधिस द्वारा अल्प समय में किया जा सकें। ये हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धी है कि डालसा के गठन के लिए **हमारे प्रखण्ड अड़की के 16 पंचायतों में से सिन्दरी पंचायत को चुना गया**। हम सभी अपने विद्यालय में **इसके गठन हेतु सभी मान दण्डों को पूर्ण करने में सक्षम रहें।**

## भविष्यकालीन योजनाएँ

**1 खेलकूद में छात्रों को राष्ट्रीय/अर्न्तराष्ट्रीय खेलों सहभागीता सुनिष्चित कराना:–**

हमारे विद्यालय के छात्रों में खेल के प्रति काफी उत्सुक्ता एवं रूचि है । इस क्षेत्र बच्चों में हॉकी, फुटबॉल, कबड्डी, खो–खो के प्रति काफी रूचि है। परन्तु मुख्य रूप से इस क्षेत्र के बच्चे **खो–खों एवं कबड्डी में अत्यधिक रूचि रखते है**, चुँकी इन खलों अत्यधिक संसाधनो/उपस्करों की आवष्यक्ता नहीं होती और यहां के बच्चे भी गरीबी स्तर से भी निम्न परिवारों से संबंध रखते है। इन सबके बावजूद हमलोगों ने अपने स्तर से अपने विद्यालय के बच्चों को जिला एवं राज्य स्तर तक के प्रतिस्प्रद्धाओं में उनकी भागीदारी सुनिष्ति करायी। परन्तु हमरा प्रयास एवं संकल्प है कि जब तक अपने **विद्यालय के बच्चे राष्ट्रीय/अर्न्तराष्ट्रीय अथवा सबसे बड़ी प्रतियोगिता ओलंपिक खेल में अपने देष के लिए मेडल लाए और देष के साथ साथ हमें भी गौरवन्वित करें।** इसके लिए हम अपने विद्यालय में जल्द ही खो–खों प्रषिक्षण अकादमी खोलने के लिए प्रयासरत है इसके लिए खेल सचिव के साथ साथ अन्य अधिकारीयों से लगातार बैठक होती रही है।

## 2 व्यवसायिक षिक्षा का अधिकाधिक विकास एवं षिक्षित बेरोजगारी को दूर करना

आज के इस आधुनिक युग में एकेडमिक एवं तकनिकी षिक्षा का स्तर दिनों दिन काफी बढ़ता जा रहा है। इस प्रतियोगिता के नए दौर में सबो को सरकारी संस्थानों/ कार्यालयों एवं मल्टीनेषनल कंपनीयों में नौकरी के आसार काफी कम होते जा रहें है एवं षिक्षित बेरोजगारों की संख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही है। जिसका परिणाम की लोग नाकारात्मक दिषा की ओर भटकते जा रहें है। साकारात्मक सोच के साथ बच्चों को विद्यालयी षिक्षा के साथ–साथ निम्नलिखित व्यवसायिक षिक्षा जोड़ने के लिए हम सभी प्रयासरत हैः–

- **सिलाई एवं टेलरींग–** इस षिक्षा के माध्यम से बच्चे अपने आप को आत्मर्निभर बना सकते है जिससे की उनमें हिनता की भावना प्रकट नहीं होती।
- **कम्प्यूटर षिक्षा/प्रषिक्षण**– जैसा की हम सभी जानते है आज के इस तकनीकी युग में कम्प्यूटर षिक्षा के बिना अपने आप को विकसित कर पाना काफी मुष्किल है। इस षिक्षा के माध्यम से छात्र अपने आपको विभिन्न कुपनीयों में अपनी सेवा देकर अपने आप को आत्मर्निभर बना सकते है और इसके लिए ग्राम समिति एवं सरकार के प्रयासों के बाद हमारे विद्यलाय में कम्प्यूटर प्रषिक्षण की सुविधा को विगत वर्ष बहाल कर दी गयी है।
- **कुटीर उद्योगों के प्रति जागरूक एवं प्रषिक्षित कराना–**हमारे क्षेत्र में ग्रामीण बहुलता अधिकाधिक है यहां के बच्चों को लघु उद्योगा ( बकरी पालन, मुर्गी पालन, गाय पालन, बागवानी, कृषि आदि) का प्रषिक्षण दे कर उन्हें एवं उनके परिवारों को आत्मर्निभर बनाना। इसके लिए सरकार एवं उच्च अधिकारीयों के साथ लागातार बैठक कर इस योजना को धरातल पर लाने के लिए प्रयासरत हैं।

## 3 विद्यलाय परिसर में निर्मित मंदिर को पूरे सम्मान एवं धार्मिक भाव के मान रखते हुएविद्यालय परिसर से अलग करवाना

जैसा की हम सभी जानते है विद्यालय अपने आप में सभी धर्मो के लिए एक मंदिर के समान होती है। विद्यालय परिसर में मंदिर का होना कहीं न कहीं विभिन्न धार्मिक समुदायों के लोगों/छात्रों में **धार्मिक भेद–भाव की संकल्पना को जन्म देती है, जिससे छात्रों में विद्यालयी एकता को एकसूत्र में बांधने में बाधक का कार्य करती है।** इसलिए निर्मित मंदिर को विद्यालय के अर्द्धनिर्मित चारदिवारी को उॅचा एवं मंदिर को परिसर से अलग करने हेतू लागातार

हमसभी स्थानीय विधायक एवं सांसद से बैठक होती रही हैं और ऐसा उम्मीद जताया जा रहा और आगमी वित्तीय वर्ष में बिना किसी को धार्मिक ठेंस पहुॅचाए समस्या का निदान कर लिया जाएगा।

## स्वयं की स्कूल लीडर के रूप में भूमिका

मैं, विद्यालय प्रभारी, श्रीमती शुचिता होरो, मुण्डा आदिवासी जनजाति से संबंध रखती हूॅ। मेरी नियुक्ति 2015 में एक सहायक षिक्षिका के पद पर खूॅटी जिला के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र अड़की प्रखण्ड में किया गया। वहां के वातावरण से परिचित होने के बाद ऐसा अनुभव हो रहा था कि मैं यहां कैसे काम कर पाउॅगी।

मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती थी की यह एक नक्सल क्षेत्र है यहां आने जाने की सुविधा भी बहुत ही कम है किन्तु धीरे –धीरे सभी चीजें अनुकूलिक होती चली गई। मेरे पूर्व में किए गए कार्यो के आधार पर मुझे अगस्त 2016 में पूरे विद्यालय का प्रभार सौप दिया गया। जैसा मैं विद्यालय के आसपास एवं विद्यालय में होने वाले सभी गतिविधियों से भली भांती परिचित हो चुकी थी और **मुझे प्रभार रूपी नयी जिम्मेवारी दिए जाने के बाद से मेरे जह्न एक सवाल था विद्यालय को विकसित कर एक अपने आप को साबित करना।** मेरी प्रयास और **विद्यालय परीवार के सभी सदस्यों के साकारात्मक सहयोग से विद्यालय को विकास की दिषा की ओर अग्रसर करना प्रारम्भ कर दिया।** मुख्य रूप से निम्नलिखित बिन्दुओं पर हमलोगों ने अत्यधिक बल दिया–

- अनुषासन
- विद्यालय समयावधि एवं पठन–पाठन दिचर्या
- परिसर की साफसफाई एवं ससमय प्रार्थना/एसेम्बली का संचालन
- छात्रों की नियमित उपस्तिथि पर काफी जोर देना
- विद्यालय विकास समिति एवं बाल संसद का गठन

हमारे विद्यालय में **लगभग 80 प्रतिषत छात्र आदिवासी जानजाति से संबधं रखते है और मैं खुद भी एक आदिवासी महिला हूॅ और उनकी समस्याओं से अच्छी तरह से परिचित होने के कारण छात्रों को उनके परिस्थितियों के अनुकूल काम करने में मदद मिल रही थी।** मैं अपने विद्यालय संचालन और अपने नेतृत्व क्षमता को विकसित करने के दौर निम्नलिखित कठिनाइयों को सामना करना पड़ाः–

- मैं एक इसाई आदिवासी महिला हूॅ और मुझे ग्रामीणों के द्वारा धार्मिक ठेंस पहुॅचाई गई

- **विद्यालय कक्ष र्निमाण के दौरान असामाजिक तत्वों के द्वारा धमकियां मिलने लगी।**
- दषम् वर्ग में छात्रों की उपस्थिति कम एवं कमजोर छात्रों को **माध्यिमिक परीक्षा प्रपत्र नहीं भरने देने पर अभिभावको द्वारा जबरब दबाव बनाते हुए धमकियां दी गया नतिजन विद्यालय का गत वर्ष परिणाम काफी खराब रहा।**
- सरकार एवं विभिन्न समितियों के मददृ से विद्यलाय **में बिजली की उपलब्धता को सुनिष्चित की परन्तु दुर्भाग्य की पूरे बिजली के तार की चोरी की गई जिसका पूरा प्रभाव छात्रों के कम्प्यूटर प्रषिक्षण/षिक्षा पर प्रत्यक्ष रूप से पडा।**

उपरोक्त चुनौतियों एवं परेषानियों के बावजूद मैं अपने पूरे विद्यालय परिवार के साथ अपने **कर्म के प्रति निष्ठावान बनी रहीं और पूनः उन विद्यालय को पूर्नस्थापित करती रहीं** ताकि गांव के गरीब छात्र छात्रों को अनुकूल परिस्थिति में षिक्षा मिलती रहें।

**उद्देष्य/लक्ष्य**

1 सभी बच्चे षिक्षित हो एवं आत्मर्निभर बनें।

2 सबों का सर्वांगीण विकास हो और अपने देष के प्रति देषप्रेम की भावना को जागृत करते हुए देष के विकास में अपनी भागीदारी सुनिष्ति करें।

3 हमारे विद्यालय के छात्र भी राष्ट्रीय/अर्न्तराष्ट्रीय अथवा विष्व सबसे बड़ी प्रतियोगिता ओलंपिक खेल में अपने देष के लिए मेडल लाए और देष के साथ साथ हमें भी गौरवन्वित करें।

4 आई.सी.टी / तकनीकी षिक्षा पर अत्याधिक बल देना एवं अधिक से अधिक छात्र इसका लाभ ले सकें।

आज मैं जो कुछ भी बदलाव ला पायी हूँ उसमें पूरे विद्यालय परिवार, ग्राम समिति, षिक्षा समिति का योगदान सराहनीय रहा है इन सबों के प्रयास के बिना उपरोक्त चुनौतियों की सामना एवं निराकरण करना हमारे से काफी मुष्किल था। परन्तु अभी भी हमने हमने लक्ष्य को पूर्ण रूप हासिल नहीं कर पाए हैं जबतक की उपरोक्त उद्देष्यों की प्राप्ति न करे लें:–

*"पाना है जो मुकाम वो मुकाम अभी बाकी है, अभी तो आए है जमीन पर, अभी आसमान की उड़ान बाकी है, अभी तो लोगों ने सुना है मेरा नाम, अभी तो इस नाम की पहचान बनाना बाकी है"*

*जय हिन्द! जय झारखण्ड!*